IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिंदी नवगीत की विकास यात्रा के प्रमुख कविः एक अनुशीलन

ब्रजेन्द्र सिंह गुर्जर
षोधार्थी– जीवाजी विष्वविद्यालय, ग्वालियर

गीत हिंदी साहित्य की प्राचीनतम विधा है। युगीन परिवेश का प्रभाव साहित्य पर अनिवार्यतः पड़ता है। परिवेश और परिस्थितियों के दबाव के परिणामस्वरुप रचना का 'कथ्य' एवं 'रूप' दोनों में ही परिवर्तन की प्रक्रिया देखी जा सकती है। गीत के रूप और आकार का जो परिवर्तन निराला की 'गीतिका' (1935) के गीत प्रयोगों के माध्यम से आरंभ हुआ था, सन् 1958 में 'गीतांगिनी' के प्रकाशनोंपरांत उसके नवीन परिमार्जित स्वरूप 'नवगीत' की संज्ञा से अभिहित होते ही उसने एक आंदोलन का रूप ले लिया। निस्संदेह इस दौर में कुछ परंपरावादी गीतकार गीत की रूढ़ियों से मुक्त होने का प्रयास कर रहे थे। यह प्रयास प्रयोगवाद और नई कविता के आतंक की छाया में घटित हो रहा था।

नई कविता से पृथक उसके समानांतर शाष्वत गीत विधा के रूप में छंद के टूटने से जन्मी नवगीत विधा का इसी दौर में नया संस्कार भी हो रहा था। निराला की 'वर दे वीणा वादिनी वर दे' रचना में वे लिखते हैं–

''नव गति, नव लय,
ताल छंद नव,
नवल कंठ, नव जलद मंद रव,
नव नभ के नव विहग वृन्द को
नव पर नव स्वर दे।''[1]

1951–52 में साहित्यिक संघ के वार्षिक अधिवेशन में गीत विधा पर आयोजित गोष्ठी में डॉ. धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, जगदीश गुप्त, रामदरष मिश्र, केदारनाथ सिंह, सर्वेष्वर दयाल सक्सेना, शंभूनाथ सिंह, नामवर सिंह तथा कई नये कवि उपस्थित थे।

ठाकुर प्रसाद सिंह ने इस गोष्ठी में 'वंशी और मादल' की रचनाओं का पहली बार पाठ किया। 1958 में राजेंद्र प्रसाद सिंह द्वारा संपादित 'गीतांगिनी' की भूमिका में उन्होंने नवगीत के पाँच विकासशील तत्व स्वीकार किये–

1. जीव दर्शन
2. आत्म निष्ठा
3. व्यक्तित्व बोध
4. प्रीति तत्व
5. परिसंचय।

''गीतांगिनी यह संकलन नवगीत के प्रथम संकलन के रूप में प्रकाशित हुआ। इस प्रकाशन का महत्वपूर्ण अवदान यह है कि गीत की नवगीत में रूपांतरण–प्रक्रिया का यह प्रथम साक्षी है। बौद्धिक बोझिलताओं और जटिलताओं से मुक्त, संवेदना के धरातल पर अनुभूति की मार्मिकता को ही नवगीतकारों ने समवेत स्वर में स्वीकृति दी।''[2]

अप्रैल (1962) में 'वासंती' साहित्य पत्रिका में महेंद्र शंकर के संपादन में एक लेखमाला 'नये गीतः नये स्वर' शीर्षक से प्रकाशित हुई। इसमें गीत के युगानुरूप परिवर्तित होते रूपाकार को स्पष्ट करने के प्रयास किये गये। इस लेखमाला में डॉ. शंभूनाथ सिंह, जानकी वल्लभ शास्त्री, गिरजा कुमार माथुर, त्रिलोचन शास्त्री आदि ने अपने वक्तव्य प्रकाशित किये। ''रवीन्द्र भ्रमर का कथन है कि इस 'नई गीतधारा' ने हिंदी कविता की उस गीतधारा को उजागर किया जो छायावादोत्तर काल के सस्ते रोमानी प्रभाव से अलग नये युगबोध का अनुकूल भाव एवं शिल्प के माध्यम से अपने स्वरूप का संघान कर रही थी।''[3]

हिंदी जगत की गीत केन्द्रित पत्रिकाओं की भूमिका भी नवगीत की स्थापना के इतिहास में महत्वपूर्ण रही। लहर (अजमेर) 1956 से 1964 तक, वातायन (बीकानेर) 1964, 1965 एवं 1966 के अंक, उत्कर्ष (लखनऊ) फरवरी 1964, मार्च 1964 एवं 1965, दिसंबर 1965 अप्रैल 1966 के अंक, माध्यम (इलाहाबाद) नवंबर 1964, मई 1966, जुलाई 1966, जनवरी 1967 के अंक, ज्योत्सना (पटना) सितंबर 1961, आजकल (दिल्ली) अगस्त 1962, कल्पना (हैदराबाद) अक्टूबर 1963, ज्ञानोदय (कलकत्ता) अक्टूबर 1963, संबोधन (सांकरोली) अक्टूबर 1968, मूल्यांकन (लखनऊ) जनवरी 1968, शताब्दी (जबलपुर) मई 1969, नई धारा (पटना) जून 1969, राष्ट्रवाणी (पुणे) जनवरी 1971, ऋचा–दस (इंदौर) 1926, अनन्या (अलीगढ़) अक्टूबर 1977, त्रियुत्सा (ग्वालियर) 1976, धर्मयुग, साप्ताहिक हिंदुस्तान, कादंबिनी, नवनीत आदि के अनेक अंक तथा 'श्रृंगार संध्या' (कानपुर) 1979, 81, 82 और 83 की स्मारिकाएं नवगीत केन्द्रित लेख और सामग्री के प्रकाशन की दृष्टि से नवगीत की विकास यात्रा की सहचरी रही है।

इसी संदर्भ में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित संग्रह 'पाँच जोड़ बाँसरी' (1966) का भी विशेष रूप से ऐतिहासिक महत्व है। चंद्रदेव सिंह के संपादन में प्रकाशित इस संग्रह में निराला, बच्चन, ठाकुर प्रसाद सिंह, केदारनाथ सिंह और ओम प्रभाकर के गीत प्रकाशित हुए।

डॉ. शंभूनाथ सिंह द्वारा संपादित 'नवगीत दशक–एक' (1982) तथा नवगीत दशक–दो (1983) को नवगीत के परिमार्जित एवं युग प्रमाणित स्वरूप की उपलब्धि के रूप में मान्यता मिली। ''नवगीत वस्तुतः एक आंदोलन नहीं वरन् गीत की भूमि पर ही जन्मा आधुनिक भावबोध युक्त युग–संपृक्त गीत का ही एक नव्य स्वरूप है जिसमें लोकगीतों की अंतःवर्ती चेतना को आत्मसात कर जन जीवन के दर्द को गाया गया है। यह गीत की सामाजिक प्रतिबद्धता एवं जीवन की जीवंत संवेदनशीलता का विशिष्ट अनुष्ठान है। जिसमें अभिनव सृजन और आत्म विष्वास की अपरिमित्त श्रद्धा निहित है।''[4]

नवगीत की इस विकास यात्रा में कवि सम्मेलन के सुप्रसिद्ध लोकप्रिय मंचीय कवि डॉ. सोम ठाकुर (आगरा), कविवर मुकुट बिहारी सरोज (ग्वालियर), रमानाथ अवस्थी (दिल्ली), रामावतार त्यागी (दिल्ली), उमाकांत मालवीय (इलाहाबाद), माहेष्वर तिवारी, देवेन्द्र षर्मा 'इंद्र' (दिल्ली), कुँवर बेचैन (गाजियाबाद), बुद्धिनाथ मिश्र (देहरादून), गोपाल दास नीरज (अलीगढ़), वीरेन्द्र मिश्र (ग्वालियर), महेश अनघ (ग्वालियर), वीरेन्द्र आस्तिक (कानपुर), हरीलाल मिलन (कानपुर), भगवान स्वरूप चैतन्य (ग्वालियर), डॉ. श्यामा सलिल (ग्वालियर), राजकुमारी रश्मि (ग्वालियर), रमेश रंजक (दिल्ली), शांति सुमन (जमशेदपुर), धनंजय सिंह (गाजियाबाद), सुरेश कौशिक (नोयडा), गिरिजा कुमार माथुर (ग्वालियर), नरेन्द्र दीपक (गुना), चंद्रसेन विराट (इंदौर), ओम प्रभाकर (भिंड), शेरजंग गर्ग (दिल्ली), ब्रजेश श्रीवास्तव (ग्वालियर), रामस्वरूप सिंदूर (जालौन), भारत भूषण, त्रिलोचन एवं शिशुपाल सिंह निर्धन के नाम आदर पूर्वक लिये जा सकते हैं।

वीरेंद्र मिश्र के 'गीतसमग्र' के प्रकाषन से नवगीत साहित्य की महान उपलब्धि हासिल हुई है। प्रदीप पंत के संपादन में इसके चार खण्डों का प्रकाशन (दिल्ली) से हुआ है। वीरेन्द्र आस्तिक (2022) मगर कब तक (कल्पना प्रकाशन दिल्ली) बाँसों के झुरमुट से ब्रजेष श्रीवास्तव (2013) उत्तरायण प्रकाशन (लखनऊ) पहने हुए धूप के चेहरे (2018) मधुकर अश्ठाना, किनारे से धार तक (जयकुमार जलज)

2013, त्रिवेणी प्रकाशन (मुंबई) अजनबी शहर में (2004) शंकर सक्सेना (2004) सत प्रकाशन भोपाल, पत्र लिखा किसने गुमनाम (राजकुमारी रश्मि) सन् 2000 (अनुभव प्रकाशन दिल्ली) दूरबीन का दर्द (डॉ. विशंभर आरोही) 1997 सरोज प्रकाशन (दिल्ली), भूखे भील गये (आचार्य भगवत दुबे) पायेय प्रकाशन (जबलपुर) मध्य प्रदेश, धूप के पंख (2023) राजकुमारी रश्मि, अनुभव प्रकाशन (दिल्ली), झनन झकास और कन बतियाँ महेश अनघ (2013) अनुभव प्रकाशन, दिल्ली (गीतराग) (भगवान स्वरूप चैतन्य) 1917 (ग्वालियर साहित्य अकादमी, ग्वालियर, 'कहा गुलाब ने' (2009), डॉ. श्यामा सलिल, अनुभव प्रकाशन, दिल्ली, कहना है असंभव, दामोदर शर्मा अनुभव प्रकाशन (ग्वालियर) 2009, गीत प्यार के– पंडित राम प्रकाश अनुरागी (1995) पुनीत प्रकाशन, ग्वालियर आदि गीत कृतियों के प्रकाशन का नवगीत के खजाने को भरने में अपार योगदान भुलाया नहीं जा सकता।

''गीतराग (ग्वालियर) 1917, डॉ. चैतन्य की कालजयी कृति है। इसके बारे में डी. एम. सावित्री (पोर्ट ब्लेयर) का अभिमत रेखांकित करने योग्य है– गीतराग गीत की महायात्रा का मधुर गान है। इसमें गीत की महिमा, गीत की अंतर्कथा, गीत की वंदना और गीत की आत्मा का संगीत गूंजता सुनाई पड़ता है। यह कृति नवगीत की संघर्षमयी गाथा है। एक नितांत नई जीवन दृष्टि और जन चेतना का नया आयाम यहां उद्घाटित हुआ है। मानव की मुक्ति का गान प्रस्तुत करने वाले नवगीतकार चैतन्य की 'गीतराग' एक अनुपम ऐतिहासिक उपलब्धि हैं।''[5]

ग्वालियर के नवगीत कवि प्रकाश मिश्र की कृति ''समय के चित्र फलक पर 2009 (ग्वालियर) नवगीत के संदर्भ में उल्लेखनीय काव्य संग्रह कहा जा सकता है। इसके नवगीत नई चेतना और नई स्फूर्ति के साथ नये विष्वास की आस बंधाते हैं। वृतों में डूब गये सुधियों के छंद। बारूदी गंध शेष बारूदी गंध।।''[6]

गीत को परिभाषित करते हुए डॉ. चैतन्य ने लिखा है–

''गीत झुलसे पंख की लंबी कथा है।
गीत जलता नीड़ तिनके की व्यथा है।।
गीत खामोशी भरा एहसास है ये,
गीत छाया धूप, सूरज का पता है।''[7]

हिंदी गीत काव्य में नवगीत परंपरा नवीन भावबोध, नवीन छांदसिकता, लयात्मकता एवं नये प्रतीकों एवं नई बिम्ब धर्मिता के लिये पारंपरिक काव्य चिन्तन से पृथक पहचानी जाती है। शंभूनाथ सिंह नवगीत के एक महान आलोक स्तंभ है। उनके काव्य में नवगीतों की प्रचुरता है। 'जहाँ दर्द नीला है', 'वक्त की मीनार' और 'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याम' ''आदि संकलन की उत्तरार्द्ध खंड की सभी रचनाएं तथा मन्वन्तर की रचनाएं पारंपरिक गीत सौंदर्य सहित गद्य गीति या नवगीतात्मक रूप में रची गई है।''[8] डॉ. शंभूनाथ सिंह गीतिरस की परिपक्व काव्यचेतना के कवि हैं। सुविचारित जीवनदृश्टि और विवेक समन्वित दुःख–सुख को समझने की शक्ति उनकी अनुभूति में निहित है। वैचारिक धरातल पर मानवतावादी नवगीत कवि हैं।

''वीरेन्द्र मिश्र के नवगीतों में भाव प्रवणता, राष्ट्र प्रेम, मानवता, संघर्ष, शोषण के विरुद्ध शंखनाद, युद्ध के विरुद्ध उद्घोष तथा संगीतात्मकता के विशिष्ट गुण होने के कारण बच्चन, नेपाली, सुमन तथा रंग के बाद वीरेन्द्र मिश्र ही ऐसे गीतकार हैं जो नीरज के समकक्ष रात रातभर कवि सम्मेलनों में सुने जाते रहे हैं। पंडित वीरेन्द्र मिश्र को हिंदी नवगीत का रवीन्द्र कहें तो अतिशयोक्ति न होगी।''[9]

''कवि मुकुट बिहारी सरोज ने नवगीत को व्यंग्य और वक्रोक्ति का सामाजिक कथ्य प्रदान कर एक नई शैली को जन्म दिया।''[10] रमानाथ अवस्थी, रामावतार त्यागी, धनंजय सिंह, लक्ष्मी शंकर वाजपेई, बाल स्वरूप राही, रामदरष मिश्र, रमेश रंजक, कुँवर बेचैन, देवेन्द्र शर्मा इंद्र, दामोदर शर्मा, आनंद मिश्र, रमेश कौशिक, रामकुमार कृषक, पुरुषोत्तम प्रतीक, राधेश्याम प्रगल्भ, उदयभान हंस, बैजनाथ कानूनगो, स्नेहलता स्नेह, इंदिरा इंदु, राम प्रकाश अनुरागी, बालकवि बैरागी, शांति सुमन, नचिकेता, भगवान स्वरूप, उमाकांत मालवीय, यश मालवीय, श्याम नारायण पाण्डेय, श्याम निर्मम, रामावतार रास, प्रदीप पुष्पेंद्र, डॉ. श्यामा सलिल, डॉ. जगदीश सलिल, डॉ. माधुरी शुक्ला, मनोज जैन, 'मधुर' ब्रजनाथ

श्रीवास्तव, अवध बिहारी श्रीवास्तव, वीरेन्द्र आस्तिक, डॉ. राम स्नेही यायावर, मधुकर अस्ठाना, कुमार रवीन्द्र, डॉ. चैतन्य, कैलाश गौतम, उदय प्रताप सिंह, गोपी कृष्ण गोपेष, जयकुमार जलज किशोरी रमण टंडन, जय कुमार जलज, नईम, इसाक अश्क, जहीर कुरैशी, भवानी प्रसाद मिश्र, रामस्वरूप सिंदूर, षलभ श्रीराम सिंह, सूर्य भानु गुप्त, शमशेर बहादुर सिंह, रामानंद दोषी, सर्वेष्वर दयाल सक्सेना, उदभ्रांत, नीरज, कन्हैया लाल नंदन, ओम प्रभाकर, अष्वघोष, अनूप अशेष, माहेष्वर तिवारी, राम अधीर, दुष्यंत कुमार, मधुर शास्त्री, धर्मवीर भारती, रमेश गौड, डॉ. रवीन्द्र भ्रमर, सत्यनारायण, हरीश निगम आदि इस परंपरा के उद्भव, विकास एवं पल्लवन में सदा शरीक रहे हैं।

संदर्भ सूची

1 गीतिका (1935) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, इलाहाबाद
2 नवगीतः शिल्प और जीवन मूल्य, डॉ. ब्रजेश शर्मा (2023) किताब राइटिंग पब्लिकेशन, मुंबई (महाराष्ट्र) पृष्ठ क्रमांक 91
3 नवगीतः शिल्प और जीवन मूल्य, डॉ. ब्रजेश शर्मा (2023) किताब राइटिंग पब्लिकेशन, मुंबई (महाराष्ट्र) पृष्ठ क्रमांक 93
4 अंतराल–3 सं. नचिकेता (पटना) 1972 प्रश्ठ क्रमांक 39
5 गीतराग के आवरण (फ्लैप) से उद्धरित 1917, ग्वालियर साहित्य अकादमी (ग्वालियर)
6 सभा के चित्र फलक पर– ग्वालियर साहित्य अकादमी संस्करण (2009), प्रकाश मिश्र, पृष्ठ क्रमांक–6
7 गीत राग– 1917 डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य, ग्वालियर साहित्य अकादमी, ग्वालियर, पृष्ठ क्रमांक–49
8 हिंदी गीत काव्य, उद्भव व विकास और भारतीय काव्य में इसकी परंपरा, डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन, पृष्ठ क्रमांक–308,
9 लोकमंगल– सं. भगवान स्वरूप चैतन्य, गीत विशेषांक (ग्वालियर) अप्रैल–जून 2016 पृष्ठ क्रमांक–15
10 लोकमंगल– सं. भगवान स्वरूप चैतन्य, गीत विशेषांक (ग्वालियर) अप्रैल–जून 2016 पृष्ठ क्रमांक–21